ALL RIGHTS COPY RIGHT RESERVED

कोपभवन

चिराग जैन कृत ॥ पुरुषोत्तम ॥

घर-घर आनन्द उमगता था, युवराज बनेंगे रामचन्द्र
साकेत नगर के शासन का पुखराज बनेंगे रामचन्द्र

धरती पर हरियाली छायी, आकाश मुदित होकर झूमा
उत्सव के मधुरिम झोंकों ने, सरयू की लहरों को चूमा
सूरज के हाथों, धरती पर सोना बरसाया जाता था
उपवन के हाथों मारुति में, मकरन्द मिलाया जाता था

इस घड़ी, तनिक मन्थर गति से किस्से में आया कोपभवन
सुख के साकेती महलों में, किसने बनवाया कोपभवन
उत्सव की चाल बिगाड़ गया, कुब्जा का जाया कोपभवन
धरती-अम्बर ने सुख पाया, कैकयी ने पाया कोपभवन

सौन्दर्य कुपित होकर बिखरा, उत्सव का रंग उदास हुआ
कैकयी की बुद्धि हुई दूषित, चन्दन में विष का वास हुआ
इक ओर धरा से अम्बर तक, उत्साहित पवन चहकता था
इक ओर कहीं अन्तःपुर में, रानी का हृदय दहकता था

दशरथ अनभिज्ञ रहे इससे, घर के भीतर क्या क्लेश पले
राजा को छोड़, पिता बनकर; अन्तःपुर को अवधेश चले
चलते-चलते दौड़े दशरथ, आनन्द कुलाचें भरता था
नयनों से हर्ष प्रवाहित था, तन से आगे मन चलता था

लेकिन अन्तःपुर पहुँचे, तो दशरथ का चेहरा क्लान्त हुआ
मानस का मौसम खिन्न हुआ, राजा का मन उद्भ्रान्त हुआ
कैकयी की देहरी की रंगत, कुछ भूखी-प्यासी बैठी थी
उत्सव के कलरव से छिपकर, इस ओर उदासी बैठी थी

राजा ने भीतर झाँका; तो आश्चर्य जगाता चित्र मिला
कैकयी का मुख निस्तेज मिला, पूरा परिदृश्य विचित्र मिला
रानी की आँखों के नीचे, बहते काजल के घेरे थे
शृंगार ध्वस्त, सब अस्त-व्यस्त, रानी ने हाल बिखेरे थे

आश्चर्य कण्ठ तक भर आया, दशरथ ने पूछा रानी से-
'बोलो, क्या ठेस लगी तुमको, किस दासी की मनमानी से?
किस पापी ने, सागर जैसी आँखों में आँसू बोये हैं?
किसके कारण, ये रतनारे नयना सारा दिन रोये हैं?'

पीड़ित प्रेमी की पीड़ा पर, आघात किया विकराल; कहा
रूठी रानी ने दशरथ की आँखों में आँखें डाल कहा-
'दो वचन उधार रहे तुम पर, क्या है ये तुमको ध्यान अभी
मुझको देने होंगे राजन! वो दोनों ही वरदान अभी!'

ये बात सुनी तो सहज हुए, फिर थोड़ा मुस्काये राजा
पर्वत को राई मान लिया, रानी के नियराये राजा-
'बस इतनी-सी है बात और तुम मुँह लटकाये बैठी हो
वरदान चार मांगो रानी, तुम दो गिनवाये बैठी हो'

‘तुम कहो, सुरों के हाथों से अमृत का घट ले सकता हूँ
ऐसा क्या है इस दुनिया में, जो तुम्हें नहीं दे सकता हूँ
तुम चाहो तो इस क्षण, मेरे प्राणों पर फन्दा कस दो तुम
लेकिन ऐसे रूठी न रहो, इक बार प्रियतमा हँस दो तुम!’

अवसर का मूल्यांकन करके, राजा को रण में घेर कहा
स्वर को मीठा करके बोली, पति के मन पर कर फेर कहा-
'बस दो अभिलाषा पूर्ण करो, जिससे मुझको कुछ श्वास मिले
हो जाय भरत का राजतिलक, और राघव को वनवास मिले!'

सुनते ही सन्न हुए दशरथ, कैकयी का मुख क्या बोल गया
ऐसा लगता था कोकिल-स्वर, कानों में सीसा घोल गया
'रानी तुमने ये क्या मांगा, क्या इसीलिए सब स्वांग किया?
मैंने जीवन का नाम लिया और तुमने जीवन मांग लिया!'

‘पूरा उपवन मत नष्ट करो, क्यारी से पुष्प भले बीनो!
चाहे मेरा सब कुछ ले लो, पर मुझसे राम नहीं छीनो!’
नारी ने हठ धारण की थी, अनुनय अपमानित होनी थी
करुणा को ठेस पहुँचनी थी, आशा की आँखें रोनी थी

क्रोधित होकर बोली कैकयी– ‘मत झूठे गाल बजाओ तुम
या अपने वचन करो पूरे, या फिर अपयश को पाओ तुम
कल भोर अगर वल्कल धारे, वनगमन नहीं कर गये राम
तो समझो मरण कैकयी का, रघुवंशकीर्ति की ढली शाम।’

थककर धरती पर गिरा धैर्य, निरुपाय बिलखते थे दशरथ
कैकयी के चेहरे पर उतरी रजनी को तकते थे दशरथ
फिर बोले चाँद-सितारों से- 'तुम रघुकुल की पीड़ा हरना!
यह रात बीतने मत देना! हे सूर्य, सवेरा मत करना!'

बेसुध दशरथ, आँखें मून्दे, सहते थे जग भर का विषाद
प्रिय राम चले वल्कल धारे, लक्ष्मण और सीता हुए साथ
सब साज त्याग वन को जाते, महलों ने देखे रामचन्द्र
क्यों बढ़कर काट नहीं देते, विधिना के लेखे रामचन्द्र

राघव के बिन वे कनक-महल, यह दृश्य बनाते थे मन में
नगरी की पार्थिव देह पड़ी, और जीव जा रहा था वन में
वैभव ने वन की राह धरी, सौभाग्य नगर का फूट गया
बह गये तीन दीपक जल में, पीछे अन्धियारा छूट गया

मूर्च्छा टूटी, दशरथ जागे, फिर चिरनिद्रा में लीन हुए त्रैलोक्य-विजेता, गृहक्लेशों के कारण प्राणविहीन हुए दशरथ की माटी कहती थी- 'ना मूल बचा, ना ब्याज बना ले कैकयी अपने बेटे को युवराज नहीं, महाराज बना!'

चिराग़ जैन का जन्म २७ मई १९८५ को दिल्ली में हुआ। वे हिंदी के एक प्रतिष्ठित कवि हैं। कविता की सभी विधाओं पर उनकी लेखनी चलती है। काका हाथरसी हास्यरत्न सम्मान से लेकर हिन्दी अकादमी दिल्ली के भाषादूत सम्मान तक दर्जनों अलंकरण चिराग़ जैन की लेखनी को प्राप्त हैं।

चिराग़ जैन द्वारा रचित पुरुषोत्तम महाकाव्य रामायण के पात्रों के मन में चल रहे भावों को कविता में अभिव्यक्त करता है। यह रामकथा की सबसे ताज़ा तथा मनमोहक प्रस्तुति है।

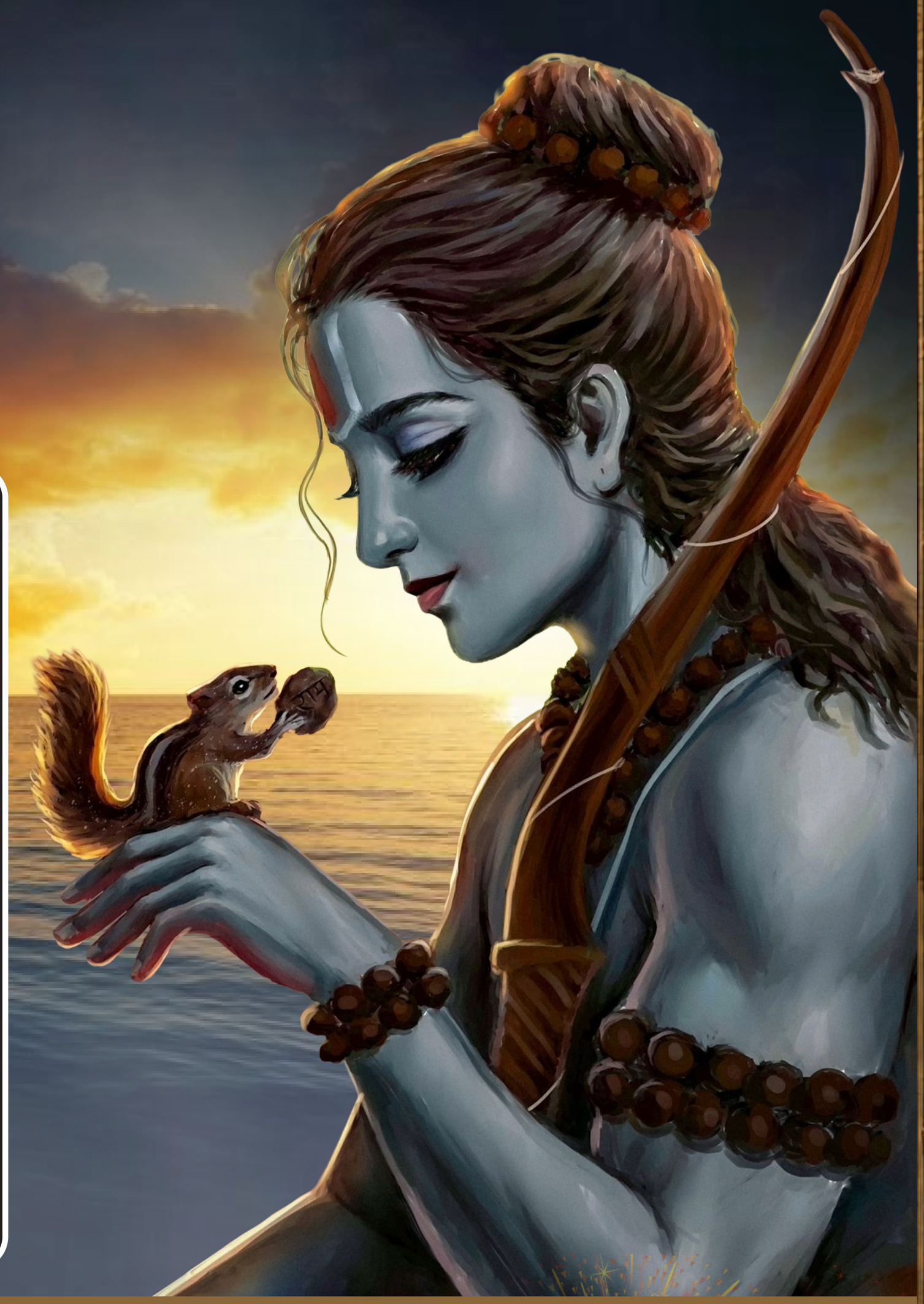

KAVIGRAM

+91 80 9090 4560

thekavigram@gmail.com

चिराग जैन कृत

॥ पुरुषोत्तम ॥